# मुक्त चिन्तन

News Letter

उ०प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

मुक्त चिन्तन

09 अक्टूबर, 2025


# भारतीय ज्ञान परंपरा पर मुक्त विश्वविद्यालय में हुआ सेमिनार

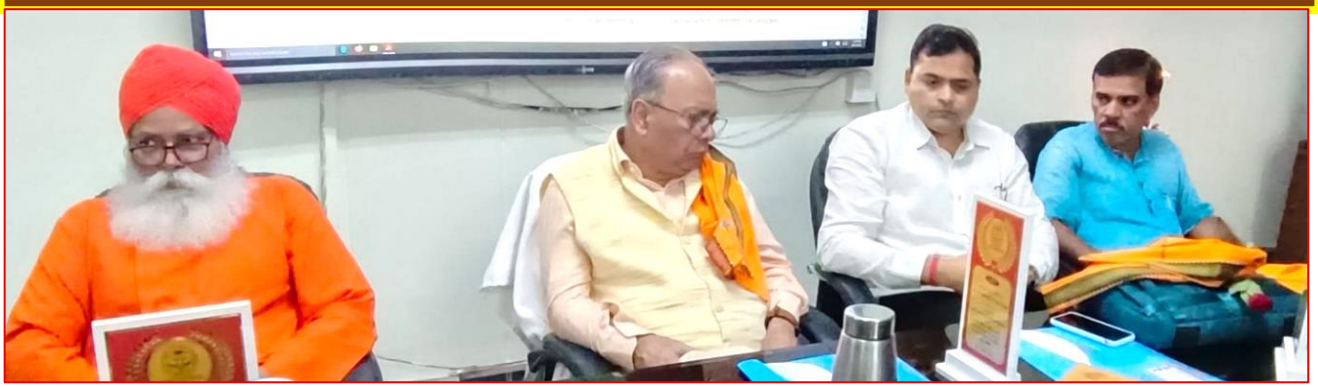

उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज एवं रिनेशॉ यूनिवर्सल (बौद्धिक शाखा) आनंद मार्ग प्रचारक संघ, कोलकाता के तत्वावधान में कुलपति आचार्य सत्यकाम जी के निर्देशानुसार कार्यक्रम समन्वयक प्रो. विनोद कुमार गुप्त के कुशल मार्गदर्शन में भारतीय ज्ञान परम्परा में श्री श्री आनन्दमूर्ति का योगदान विषय पर दिनांक 09 अक्टूबर, 2025 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यायल के सरस्वती परिसर तिलक शास्त्रार्थ सभागार में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आचार्य दिव्यचेतनानन्द अवधूत, सचिव, केन्द्रीय जनसम्पर्क आनन्द मार्ग, प्रचारक संघ कोलकाता तथा विशिष्ट वक्ता प्रो. अनिल प्रताप गिरि, संस्कृत विभाग, इ.वि.वि., प्रयागराज एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम एवं संगोष्ठी के निदेशक, प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी, आयोजन सचिव, डॉ. दयानन्द उपाध्याय एवं सह–आयोजन सचिव डॉ. सतेन्द्र कुमार, श्री संजीव भट्ट रहे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन व मॉ सरस्वती प्रतिमा पर माल्यापर्ण करके किया गया। इस अवसर पर शोध छात्राओं द्वारा कुलगीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन शोध छात्र (संस्कृत) दिग्विजय सिंह ने किया। इस संगोष्ठी में आये हुए अतिथियों के प्रति संगोष्ठी के निदेशक, प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी जी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर समस्त विद्याशाखाओं के निदेशक, आचार्यगण, सह–आचार्यगण, सहायक आचार्यगण, शोधार्थी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

*दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए माननीय अतिथिगण*

*कार्यक्रम का संचालन करते हुए शोध छात्र दिग्विजय सिंह*

*सरस्वती वन्दना प्रस्तुत करती हुई शोध छात्रा*

*विश्वविद्यालय कुलगीत प्रस्तुत करती हुई शोध छात्रायें*

*माननीय अतिथियों को पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर उनका सम्मान करते हुए विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यगण*

*वाचिक स्वागत एवं विषय प्रर्वतन करते हुए सेमिनार के समन्वयक आचार्य विनोद कुमार गुप्त*

वेबिनार/सेमिनार के समन्वयक आचार्य विनोद कुमार गुप्त ने वाचिक स्वागत एवं विषय प्रर्वतन करते हुए कहा कि श्री आनन्दमूर्ति जी एक दार्शनिक समाज सुधारक भाषाविद एवं लेखक थे। उन्होंने ध्यान और योग के माध्यम से आत्ममुक्ति और मानवता के सेवा के उद्देश्य से एक वैज्ञानिक और तर्कसंगत दर्शन विकसित किया।

# भारतीय संगीत शास्त्र एक तपस्या है : प्रो. अनिल प्रताप गिरि

कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता प्रो. अनिल प्रताप गिरि, संस्कृत विभाग, इ.वि.वि., प्रयागराज ने कहा कि श्री आनन्दमूर्ति जी की कृति आनन्द सूत्रम में आगम एवं निगम चिन्तन की विस्तृत व्याख्या है और उन्होंने आगम और निगम चिन्तन की परम्परा को एक दूसरे का पूरक बताया है। श्री गिरि ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा जानने के लिए श्री आनन्द मूर्ति जी ने तीन अवयव का उल्लेख किया है। भारतीय भाषा विज्ञान, आध्यात्मिक मनोवृत्त, एवं भारतीय मनोविज्ञान। उन्होंने कहा कि भारतीय संगीत शास्त्र एक तपस्या है आध्यात्म है इससे व्यक्ति परामानन्द सुख प्राप्त करता है।

# आध्यात्मिक अनुशासन प्रदान करती हैं आनन्द मूर्ति की शिक्षाएं– दिव्यचेतनानन्द

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो आचार्य दिव्यचेतनानन्द अवधूत, सचिव, केन्द्रीय जनसम्पर्क आनन्द मार्ग, प्रचारक संघ कोलकाता ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्री श्री आनन्द मूर्ति जी की शिक्षाएं शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए व्यावहारिक आध्यात्मिक अनुशासन प्रदान करती है। उनके दर्शन में ईश्वर की अर्न्तर्निहिता और पारलौकिता पर आधारित है। उन्होंने श्री आनन्द मूर्ति जी का नब्ब नौ मानवतावाद का विचार प्रस्तुत किया जिसमें पृथ्वी के सभी जीवों को भाई बहन एक समान रूप से देखा जाता है। अवधूत जी ने कहा कि श्री आनन्दमूर्ति जी के विचार पूँजीवाद और साम्यवाद के प्रगतिशील विकल्प के रूप में देखते हैं। श्री आनन्दमूर्ति जी ने आध्यात्म तंत्र योग के विज्ञान को समायोजित किया और एक वैज्ञानिक दर्शन विकसित किया । उन्होंने आनन्दमार्ग नामक एक संगठन बनाया जो ध्यान और योग के माध्यम से आत्म मुक्ति और मानवता के सेवा का लक्ष्य रखता है। दिव्येचतनानन्द जी ने कहा कि श्री आनन्दमूर्ति जी ने आत्म सुख तत्व एवं समसमाज सुख तत्व के बारे में बताया है कि उनके नवमानवतावाद के मूल सिद्धान्तो में मनुष्य के भौतिक कल्याण मानसिक सुख शान्ति एवं आध्यात्मिक संतुष्टि शामिल है।

# भारतीय ज्ञान परम्परा में आध्यात्म का वास्तविक अर्थ मानव कल्याण– प्रोफेसर सत्यकाम

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य सत्यकाम ने कहा कि श्री आनन्द मूर्ति जी ने मानव कल्याण के लिए मूल्य स्थापित किया। उनके नव मानवतावाद के आदर्श का थोड़ा सा भी अंश मनुष्य स्वीकार कर ले तो जीवन सुगम हो जायेगा। उन्होंने बहुत सारी कुरूतियों को हमारे समाज से दूर किया इसमें राजराममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा में आध्यात्म का वास्तिविक अर्थ है मानव कल्याण हमारे ऋषि मुनियों ने मानव कल्याण के लिए खगोल शास्त्र विज्ञान, ज्योतिष, गणित आदि क्षेत्रों में आध्यात्म का प्रयोग किया है। उन्होंने निदेशकों एवं आचार्यों से श्री आनन्दमूर्ति जी के योगदान को पाठ्यक्रम में शामिल करने का सुझाव दिया एवं उन्होंने नव मानवतावाद अपना विश्वविद्यालय स्वीकार करे जिससे सभी लोगों का भौतिक व आध्यात्मिकता का विकास हो।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए संगोष्ठी के निदेशक, प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी जी

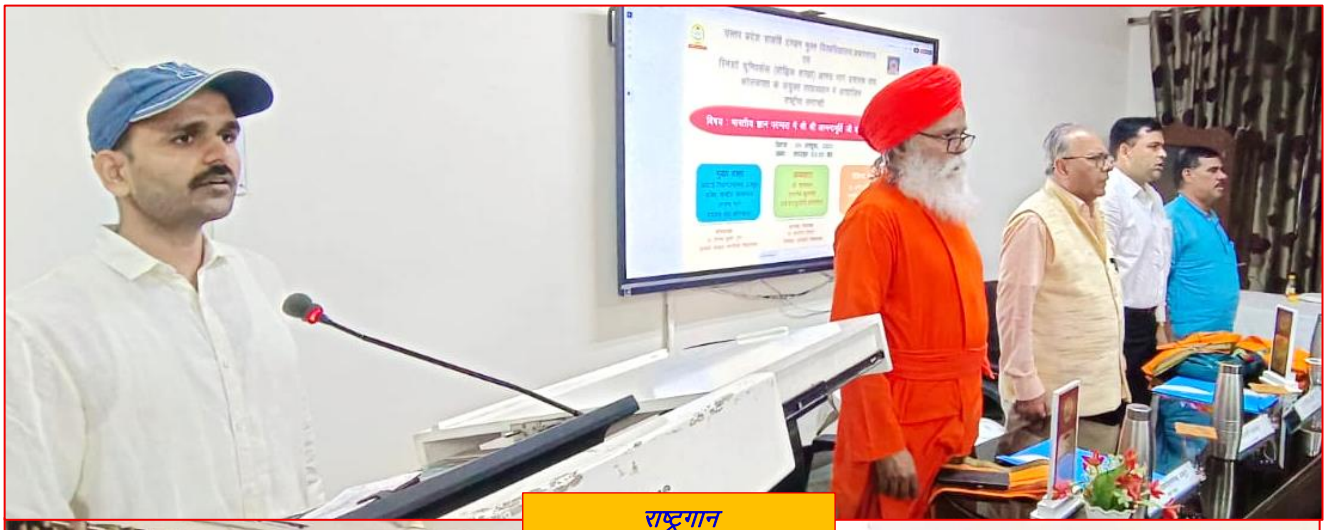

राष्ट्रगान